वर्ष - ०८ अंक- १८ नीमच, बुधवार २२ से २८ अक्टूबर २५ कुल पृद्ध - ०८ मूल्य - ५ रू



मुख्यमंत्री ने आगामी त्यौहारों के दृष्टिगत जनप्रतिनिधि और अधिकारियों से किया वर्चुअल संवाद

नीमच। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रदेश की सांस्कृतिक, धार्मिक, सामाजिक विरासत को सहेजने के लिए 21 और 22 अक्टूबर को सभी जिलों के प्रमुख सार्वजनिक स्थलों और गौशालाओं में गोवर्धन पूजा का आयोजन धूमधाम से किया जाए। इन आयोजनों में मंत्री, सांसद, विधायक, नगरीय निकायों और पंचायत प्रतिनिधियों सहित स्थानीय जनप्रतिनिधि शामिल हों। स्थानीय स्तर पर सक्रिय सांस्कृतिक मंडलों को शामिल करते हुए कार्यक्रमों को उत्सव के रूप में मनाया जाए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने रविवार को मुख्यमंत्री निवास से आगामी



सभी सांसद, विधायक, जिला कलेक्टर -पुलिस अधीक्षक-नगरीय निकायों के पदाधिकारी और अधिकारियों को VC के माध्यम से संबोधित किया।नीमच

श्री हिमांश् अंकित जायवाल, एडीएम श्री बी.एस. कलेश एवं अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्री एन.एस. सिसोदिया व अनुय अधिकारी







श्रीमती सोनाली उज्जवल पटवा उपाध्यक्ष, नगर परिषद कुकडेश्वर

पार्षदगण :- श्रीमती कलाबाई प्रेमचंद तमोली, श्रीमती टीना सागर पेंटर, श्री महेश (छोट्र) टोड़ावाल, श्रीमती पाब्दनण :- त्रामता कलाबाह् प्रमेचंद्र तमाला, त्रामता दाना सागर पटर, त्रा महरा (छाटू) टाइविल, त्रामता लक्ष्मीबाई रामू कछावा, श्रीमती कौशल्याबाई लीलाधर (काजू) मोदी, श्री भागीरथ मालवीय, श्री सुनील तेजावाला श्रीमती संगीता प्रमोद (बाबू लॉण्ड्री), श्री राम्भुदयाल मिलन, श्रीमती बबलीबाई नन्दलाल मालवीय, श्रीमती शान्तीबाई विजेश माली, श्री सुनील (मुकेश) बागोरिया, श्री राजू खाती, श्री कैलाश राठौर (सांसद प्रति.), श्री नरेंद्र मालवीय (विधा. प्रति.) एवं समस्त कर्मचारीगण नगर परिषद कुकड़ेश्वर जिला नीमच म.प्र.।

कमलसिंह परमार





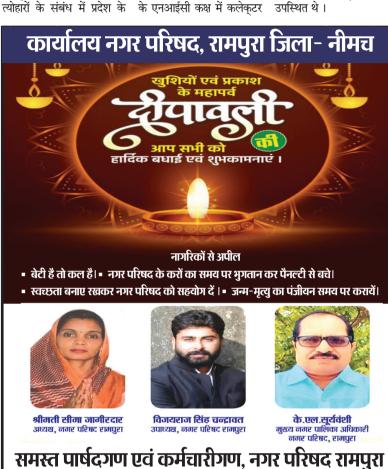


रामलाल राठौड़

अब्दुल रऊफ खान अधिकारी नगर परिषद

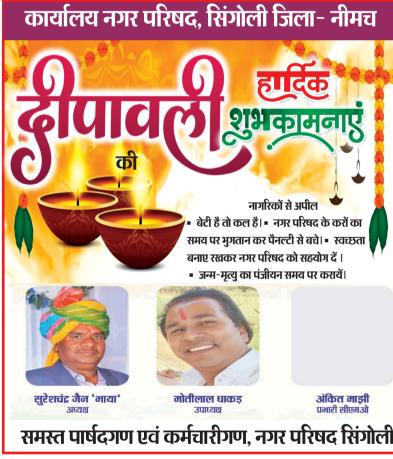
नागरिकों से अपील

बेटी है तो कल है। = नगर परिषद के करों का समय पर भुगतान कर पैनल्टी से बचे। = स्वच्छता बनाए रखकर नगर परिषद को सहयोग दें 📭 जन्म-मृत्यु का पंजीयन समय पर करायें।

















क्रमांक/जि.शि.अ./ई-निविदा/2025/_968

नीमच, दिनांक <u>1011012025</u>

NOTICE INVITING E- TENDER

मध्यप्रदेश शासन स्कूल शिक्षा विभाग जिला नीमच द्वारा अधीनस्थ विद्यालयो एवं महाविद्यालयों के लिये पुस्तके क्रय की जाने हेतु इच्छुके फर्मों से ई-निविदा आमंत्रित की जाती है। निविदा फार्म का प्रारूप एवं शर्ते बेवसाइट https://mptenders.gov.in/ पर उपलब्ध है।

System	Name of work	Probable	Amount of	Cost of	Period of
1 ender	and processing and	amount of	Earnesț	Tender	completion
No.		Contract	Money	Docume	(In Days)
		(In Rs.)	(In Rs.)	nt (In	
				Rs.)	v.,
1	विधालयो में पुस्तके क्रयकरने हेतु	5,00,000 /-	15,000 /-	1,000 /-	45

निविदा में भाग लेने वाले फर्म/व्यक्ति को निविदा एवं अमानत राशि Net Banking /RTGS/NEFT के माध्यम से जमा करनी होगी, उक्त राशि अन्य किसी भी रूप में स्वीकृत नहीं की जावेगी। उक्त राशि जमा के अभाव में प्रस्तुत निविदा मान्य नहीं की जावेगी। निविदा हेत् शर्ते एवं आवदेन पत्र ऑनलाईन शल्क रूपये 1,000/- जमा करावकर प्राप्त किये जा सकते।

- ऑनलाईन निविदा के संबंध में निर्धारित दिनांक वेबसाईट में अंकित Key Dates अनुसार
- यदि निविदा में किसी भी प्रकार का संशोधन होता है तो वह वेबसाईट पर ही प्रदर्शित होगा, जिसका अलग से समाचार पत्रो में प्रकाशन नहीं करवाया जावेगा।
- अन्य आवश्यक जानकारी कार्यालयीन कार्यदिवस एवं समय में प्राप्त को जा सकती है।

जिला शिक्षा अधिकारी

जिला - नीमच (म.प्र.)

दिवालीः रोशनी का एक शाश्वत त्योहार

दिवाली, जिसे दीपावली के नाम से भी जाना जाता है, भारत और दुनिया भर में भारतीय समुदायों द्वारा मनाए जाने वाले सबसे जीवंत और महत्वपूर्ण त्योहारों में से एक है। यह पावन त्योहार अपने उल्लासपूर्ण वातावरण, जगमगाती रोशनी, जीवंत सजावट और एकजुटता की भावना से चिह्नित है। 2023 में, दिवाली 12 नवंबर को मनाई जाएगी, जो लाखों लोगों के जीवन में खुशियाँ और समृद्धि का स्वागत करेगी।

दिवाली क्यों मनाई जाती है?

दिवाली का त्यौहार विविध सांस्कृतिक और ऐतिहासिक महत्व रखता है। मुख्यतः, यह बुराई पर अच्छाई और अंधकार पर प्रकाश की विजय का प्रतीक है। यह भगवान राम, उनकी पत्नी सीता और भाई लक्ष्मण के साथ राक्षसराज रावण को हराकर और सीता को छुड़ाकर अयोध्या लौटने का प्रतीक है। जब वे अयोध्या लौटे, तो लोगों ने तेल के दीप जलाकर उनका स्वागत किया, जो धर्म की विजय और अज्ञानता के नाश का प्रतीक है।

इतिहास और परंपराः

दिवाली एक प्राचीन हिंदू त्योहार है जिसकी गहरी सांस्कृतिक जड़ें हैं और कई पौराणिक कथाओं में इसका महत्व है। इस उत्सव के दौरान तेल के दीये जलाना, आतिशबाजी करना, उपहारों का आदान-प्रदान करना और स्वादिष्ट मिठाइयाँ

और नमकीन व्यंजन बनाना कुछ पारंपरिक रीति-रिवाज हैं। परिवार धन और समृद्धि की प्रतीक देवी लक्ष्मी के स्वागत के लिए अपने घरों की सफाई करते हैं और उन्हें रंग-बिरंगी रंगोली और चमकदार रोशनी से सजाते हैं।

यह त्यौहार कुछ क्षेत्रों में हिंदू नववर्ष की शुरुआत का भी प्रतीक है, जो एक नई शुरुआत और जीवन के नवीनीकरण का प्रतीक है।

दिवाली का महत्वः

दिवाली का त्यौहार गहरा सांस्कृतिक और आध्यात्मिक महत्व रखता है। जलते हुए दीये, आतिशबाजी और मिठाइयाँ बाँटना खुशियाँ फैलाने और अंधकार को दूर भगाने का प्रतीक है। यह वह समय है जब परिवार एक साथ आते हैं, रिश्ते सुधारते हैं, पुरानी शिकायतों को भुलाकर एकता और एकजुटता की भावना को बढ़ावा देते हैं। दिवाली धन और समृद्धि की प्रचुरता का भी उत्सव है, जो आने वाले वर्ष के लिए देवी लक्ष्मी की कृपा का आह्वान करती है। बुराई पर अच्छाई की जीत में विश्वास और आंतरिक ज्ञान का महत्व, दिवाली को एक प्रिय और पूजनीय

दिवाली यानि दीयों की रोशनी से भरपूर माहौल, लक्ष्मी पूजा और ढेर सारी खुशियाँ। दीवाली पर्व भले ही ऊपर से देखने में साधारण लगता हो लेकिन यह खुद में कई आध्यात्मिक महत्ताओं को समेटे हुए हैं।

नीमच, बुधवार २२ से २८ अक्टूबर २५ तक

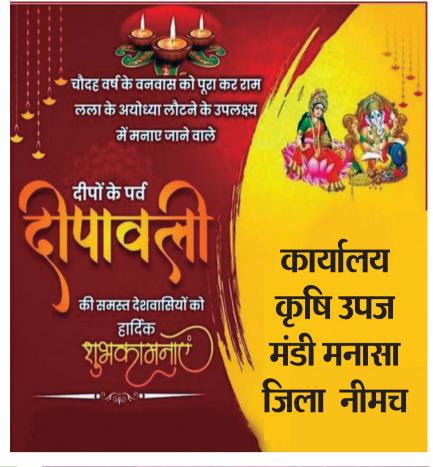
ऊँ शारदेभ्यो नमः



प्रमोद रामावत 'प्रमोद'।

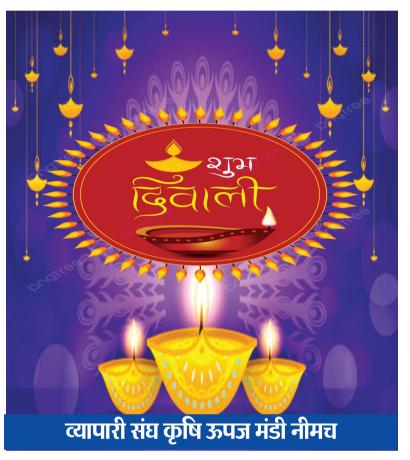
जो आँखों सेओझल-ओझल,उसे निहारूँ सारा दिन जो बिल्कुल भूला बैठा है, उसे पुकारूँ सारा दिन चमक-दमक तुम आसमान की, मैं धरती का ॲंधियारा इस दीवाली,रौशन होने, तुम्हें उतारूँ सारा दिन ऑंगन है तक़दीर हमारी, और रंगोली बिंदिया है तेरी आँखों के दर्पण में,भाग्य सँवारूँ सारा दिन वनवासी हैं राम राह में, प्यास युगों की शबरी है, दर्शन का पल राम ही जानें,बाट बुहारूँ सारा दिन कितनी साँसें व्यर्थ गई हैं, कितनों का उपयोग हुआ कितनी साँसें बची हुई हैं,यही विचारूँ सारा दिन क्या लिखवा लाया ऊपर से,विधि की लाज बचानी है सारी दुनिया आक्रामक है, मैं मन मारूँ सारा दिन।





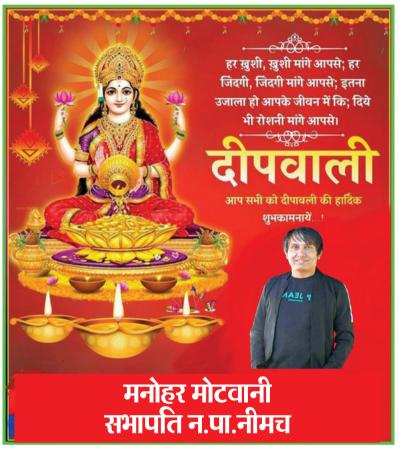
दीपवली की हार्दिक

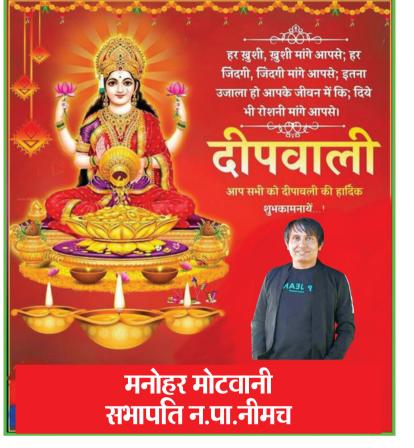
शुभकामनाएं

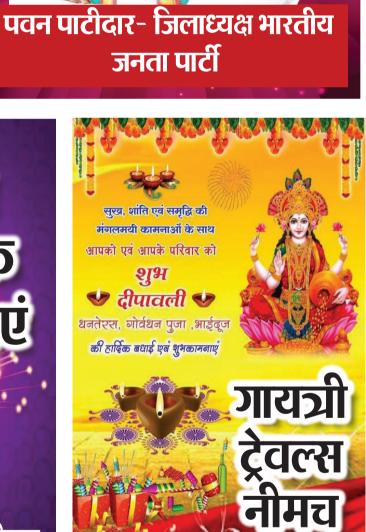


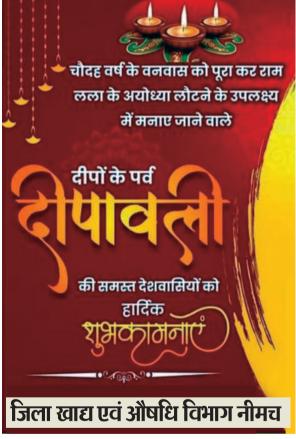
हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

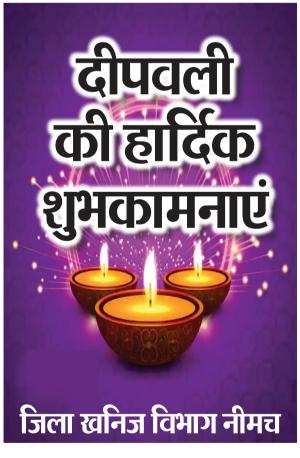
एक शुभचिंतक

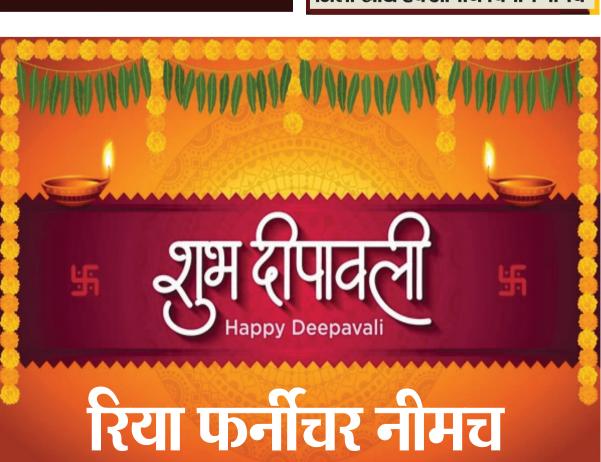














दुनिया के इन देशों की दिवाली है बहुत मशहूर इस तरह मनाया जाता है दीपों के पर्व का जश्न

रोशनी का पर्व दिवाली हिंदू धर्म के क्या होता है दिवाली पर खास। सबसे प्रमुख त्योहारों में से एक है। दिवाली के मौके पर हर जगह दीपों की जगमगाहट. इलेक्ट्रॉनिक लाइट्स की चमक नजर आती है। वैसे तो त्योहार खुशियों और उत्साह का होता है, लेकिन दिवाली में यह उत्साह कई गुना बढ़ जाता है। दिवाली को दीपावली भी कहते हैं। दीपों का यह पर्व दिवाली हर साल कार्तिक मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है। इस साल दिवाली 24 अक्तूबर को मनाई जा रही है। दिवाली के खास मौके पर लक्ष्मी गणेश की पूजा की जाती है। तरह तरह की मिठाइयां और पकवान बनते हैं। तेल और घी के दीयों से घर के कोने कोने में प्रकाश किया जाता है। लोग पटाखे जलाकर आतिशबाजी करते हैं। भारत में रहने वालों के लिए दिवाली का मतलब प्रकाश, पटाखे, पूजा और पकवान है। लेकिन क्या आपको पता है कि भारत के अलावा भी कई देशों में दिवाली का पर्व मनाया जाता है। दुनिया के कई देश अपने तरीकों से दिवाली मनाते हैं। आईए जानते है कि विदेशों में कैसे मनाई जाती है दिवाली,

किन देशों में मनाई जाती है दिवाली

भारत के अलावा श्रीलंका, नेपाल, म्यांमार, थाईलैंड, मलेशिया, सिंगापुर, नीदरलैंड्स, कनाडा, ब्रिटेन, अमेरिका, इंडोनेशिया, ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, फिजी, मॉरीशस, केन्या, तंजानिया, दक्षिण अफ्रीका, गुयाना, सूरीनाम, त्रिनिदाद और टोबैगो में दीपावली मनाई जाती है।

नेपाल की दिवाली

भारत के पड़ोसी देश नेपाल में भी दिवाली उत्सव होता है। नेपाल में दीपावली को 'स्वान्ति' कहा जाता है। यह पांच दिन का पर्व होता है, जिसमें पहले दिन कौवे, दूसरे दिन कुत्ते को भोजन कराते हैं। तीसरे दिन माता लक्ष्मी की पूजा की जाती है। लक्ष्मी पूजन के दिन यानी स्वान्ति से नेपाल संवत की शुरुआत होती है। चौथा दिन नए साल की तरह मनाया जाता है। इस दिन महापूजा होती है। फिर पांचवे दिन भाई टीका होता है, सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन होता है। जो भारत के भाई दुज पर्व की तरह मनाया

श्रीलंका की दीपावली

लंका के राजा रावण का वध करके जब 14 साल के वनवास के बाद प्रभु श्री राम अयोध्या पहुंचे को दीपों से राज्य को जगमगा दिया गया। लोगों ने उत्सव मनाया। इसी मान्यता के आधार पर दीपावली का पर्व वर्षों से मनाया जा रहा है। श्रीलंका में भी दिवाली मनाई जाती है। तमिल समुदाय के लोग दिवाली के दिन तेल स्नान करके नए कपड़े पहनते हैं और पोसई यानी पूजा करते हैं। बड़ों का आशीर्वाद लेने के बाद शाम में है। पटाखे जलाते हैं।

मलेशिया और सिंगापुर की दिवाली

मलेशिया और सिंगापुर में भी दिवाली का पर्व मनाया जाता है। सिंगापुर में दिवाली के मौके पर सरकारी छुट्टी रहती है। कई

मलेशिया की दिवाली भी मशहर है। मलेशिया में हिंदू सूर्य कैलेंडर के सातवें महीने में दिवाली मनाई जाती है। हिंदू धर्म के लोग इस दिन मंदिर जाते हैं और उत्सव मनाते हैं।

फ्लोरिडा की दिवाली

फ्लोरिडा में दिवाली भारत की दिवाली जैसी ही होती है लेकिन इसका धार्मिक संबंध नहीं होता। हर साल 31 अक्तूबर और एक नवंबर के बीच सैमहेन फेस्टिवल मनाया जाता है। हैलोईन की तरह आयोजित इस फेस्टिवल में बोन फायर होता है। मनोरंजक थीम पर पार्टी, आतिशबाजी देखने को मिलती

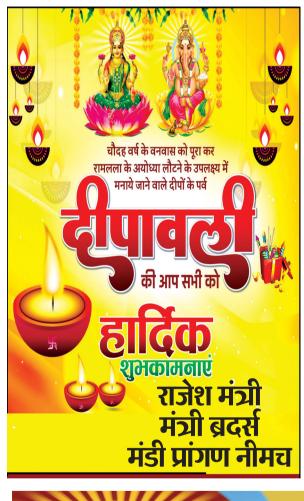
थाईलैंड की दिवाली

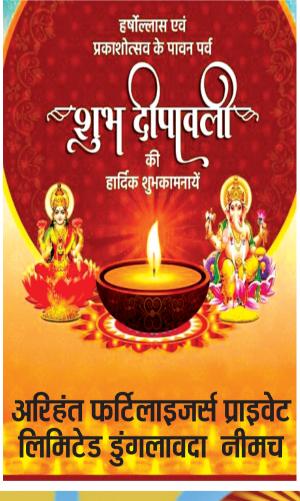
थाईलैंड में भी दिवाली मनाते हैं। यहां दिवाली को लाम क्रियोंघ कहा जाता है। केले के पत्तों से दीपक बनाकर रात के समय इसे जलाकर शहर को जगमगाया जाता है। जलते हुए दीपक को नदी के पानी में बहा देते हैं।



















इस दिवाली, परंपरा की मिठास बॉटिए!



नमकीन । स्वीट्स । बेकरी के फेस्टिव स्वीट बॉक्स के साथ मनाइए खुशियों का त्योहार!

त्योहार की हर खुशी, एक मीठे पल के साथ। गोपी मिष्ठान के साथ मनाएं यादगार दिवाली



Bulk Orders के लिए ब्किंग जारी है कॉरपोरेट और पर्सनल गिफ्टिंग के लिए परफेक्ट चॉइस!

अभी कॉल करें और अपना ऑर्डर बुक करें! \$\ 9713321345 \ नीमच | मंदसीर



ि मिष्ठात भण्डार

मिठास जो दिलों को जोड़े।



Dist. Neemuch (MP) 458470

beautiful

The Engineer's Choice

विशेष अतिथि -

अध्यक्षता

प्रधानमंत्री आवास योजनान्तर्गत निर्मित भवनों का

क्र्युअल लोकार्पण

माननीय मुख्यमंत्री डॉ. मोहन जी यादव

माननीय श्री जगदीश जी देवड़ा, उप मुख्यमंत्री एवं मंत्री वित्त व वाणि.कर विभाग म.प्र. शासन विशिष्ठ अतिथि -माननीय श्री कैलाश जी विजयवर्गीय, मंत्री नगरीय विकास, विधि एवं विधायी, संस. कार्य माननीया सुश्री निर्मला जी भूरिया, प्रभारी मंत्री एवं मंत्री महिला व बाल वि. विभाग (वर्चुअली) माननीय श्री सुधीर जी गुप्ता, सांसद मंदसौर-जावरा संसदीय क्षेत्र

> माननीय श्री दिलीपसिंह जी परिहार, विधायक नीमच माननीय श्री ओमप्रकाश जी सकलेचा, विधायक जावद माननीय श्री अनिरुद्ध माधव जी मारु, विद्यायक मनासा माननीय श्री सज्जनसिंह जी चौहान, अध्यक्ष जिला पंचायत जिला नीमच

माननीया श्रीमती स्वाति गौरव जी चौपड़ा, अध्यक्ष, नगर पालिका परिषद नीमच

द्वारा किया जावेगा।



दिनांक : 18 अक्टूबर 2025, शनिवार समय : प्रात: 09:00 बजे स्थान : मह-नसीराबाद रोड, मेडिकल कॉलेज के पास, नीमच पर आयोजित है आप सादर आमंत्रित हैं।



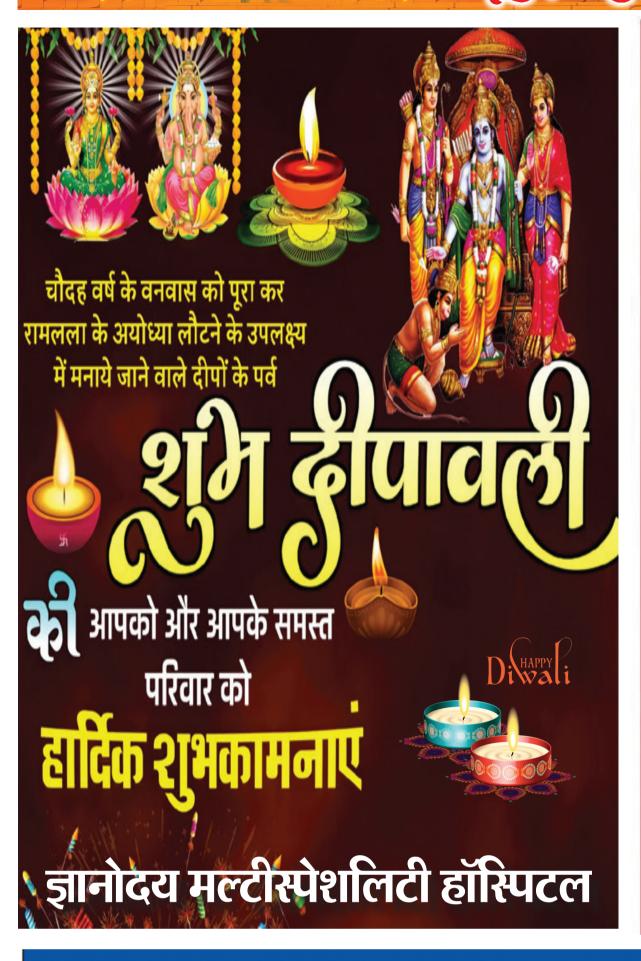


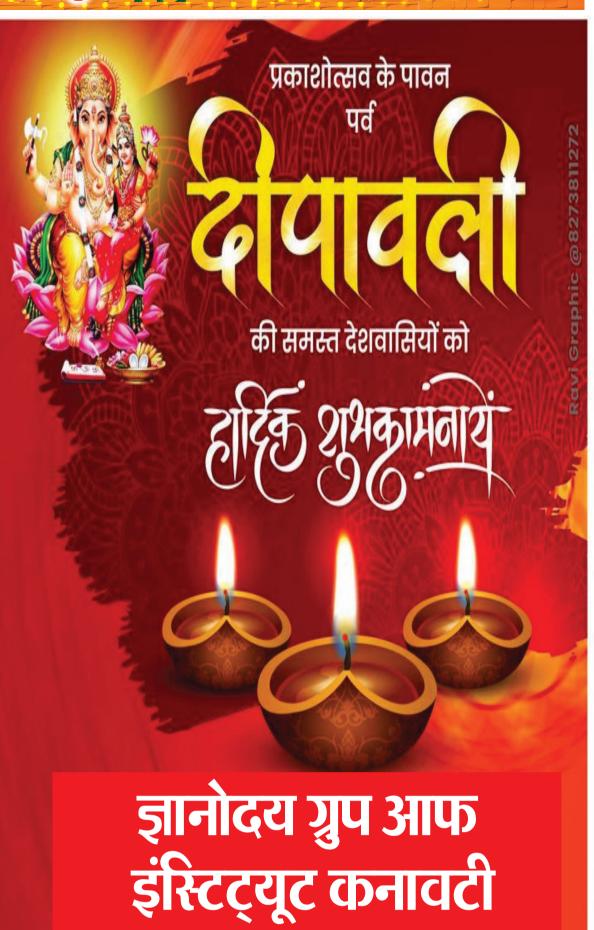


समस्त सभापति एवं पार्षदगण, नगर पालिका परिषद्, नीमच











SHRI S.R. GROUP OF COLLEGES

निर्देशक निरंजन (राजू) तिवारी पूर्व अध्यक्ष - कृषि उपज मंडी समिति, नीमच

सचालक

धर्मेश तिवारी एम.डी. – श्री एस.आर. ग्रुप, नीमच

2 Year

4 Year



- Singoli Road, Newad, Neemuch (M.P.) City Office: Indira Nagar, PG College Road, Neemuch (M.P)
- 8817326635, 98109927774

 - ⊚ shrisrcollege collegesr90@gmail.com

अर्थ "प्रकाश की पंक्तियाँ" होता है। भारतीय कैलेंडर के हिसाब से यह त्यौहार कार्तिक मास की अमावस्या को मनाया जाता है। यह पर्व ज्ञान (प्रकाश) का अज्ञानता (अंधेरे) पर विजयी होने का प्रतीक है।

पटाखे और आतिशबाजी

क्रोध, ईर्ष्या या भय - जो भी नकारात्मकता आपके मन में पिछले एक साल में जमा हो गई है, वह सभी पटाखे के रूप में विस्फोट हो जाना चाहिए। प्रत्येक पटाखा के साथ, किसी भी व्यक्ति के लिए आपके मन में जो भी नकारात्मकता हो उसका विस्फोट करें या पटाखे के उपर उस व्यक्ति का नाम लिखें और उसका विस्फोट करें और सिर्फ यह जाने कि सभी बुरी भावनाएं, ईर्ष्या, आदि जला दिए गए हैं। लेकिन हम क्या करते हैं? नकारात्मकता को मिटाने के बजाय, या तो हम उस व्यक्ति को मिटाना चाहते है या अपने आप को नकारात्मकता की आग में जलाया करते हैं। आपके पास दूसरा रास्ता भी होना चाहिए। सभी नकारात्मकता या बुरी भावनाएं पटाखे के साथ फोड दें और फिर से उस व्यक्ति के साथ मित्रता बनाए, तब आप प्रेम, शांति और आनंद के साथ हल्कापन महसूस करेंगे। इसके पश्चात उस व्यक्ति के साथ मिठाई बांटे और दीवाली का जश्न मनाएं। उस व्यक्ति को नहीं लेकिन उस व्यक्ति के अवगुणों का पटाखों से विस्फोट करना ये सही मायने में दिवाली है।

यह उत्सव ढलते चाँद के पखवाड़े के 13 दिन से प्रारंभ होता है।

पहला दिन - धनतेरस

समृद्धि (लक्ष्मी) की देवी के स्वागत के लिए रंगोली की डिजाइन के सुंदर पारंपरिक रूपांकनों के साथ रंगीन प्रवेश द्वार बनाए जाते है। उसकी लम्बी प्रतीक्षा का आगमन दर्शाने के लिए. घर में चावल के आटे और कुमकुम से छोटे पैरों के निशान बनाएं जाते है। पूरी रात दीपक जलाए जाते है। इस दिन को शुभ माना जाता है इसलिए, महिलाएं कुछ सोने या चांदी या कछ नए बर्तन खरीदती है और भारत के कछ भागों में. पश की भी पजा की जाती हैं।

इस दिन को धन्वन्तरि-(आयुर्वेद के भगवान या देवताओं के चिकित्सक) का जन्मदिन माना जाता है और धन्वन्तरि जयंती के रूप में भी मनाया जाता है। इस दिन पर, मृत्यु के देवता- यम का पूजन करने के लिए सारी रात दीपक जलाएं जाते हैं इसलिए यह 'यमदीपदान' के रूप में भी जाना जाता है। यह असमय मृत्यु के डर को दूर करने के लिए माना जाता है।

दूसरा दिन - नर्क चतुर्दशी

दूसरे दिन नर्क चतुर्दशी होती है। इस दिन सुबह जल्दी जागना और सूर्योदय से पहले स्नान करने की एक परंपरा है। कहानी यह है कि दानव राजा नरकासुर- प्रागज्योतीसपुर (नेपाल का एक दक्षिण प्रांत) के शासक- इंद्र देव को हराने के बाद, अदिति (देवताओं कि माँ) के मनमोहक झुमके छीन लेते हैं और अपने अन्तःपुर में देवताओं और संतों की भी है। एक छोटा सा लड़का था जिसका सोलह हजार बेटियों को कैद कर लेते हैं। नाम निचकेत था। वह मानता था कि मृत्यू नर्क चतुर्दशी के अगले दिन, भगवान कृष्ण ने के देवता यम, अमावस्या की अंधेरी रात के दानव को मार डाला और कैद हुई कन्याओं जैसे रूप में काले हैं लेकिन जब वह व्यक्ति को मुक्त कराकर, अदिति के कीमती झुमके के रूप में यम से मिला, तो वह यम का

जाता है और सजाया जाता हैं। धन और शरीर से गंदगी को धोने के लिए एक अच्छा स्नान किया। इसलिए, सुबह जल्दी स्नान की यह परंपरा बुराई पर दिव्यता की विजय का प्रतीक है। यह दिन अच्छाई से भरा एक भविष्य की घोषणा का प्रतिनिधित्व करता है।

तीसरा दिन - लक्ष्मी पुजन

तीसरा दिन समारोह का सबसे महत्वपूर्ण दिन है-लक्ष्मी पूजा। यह वह दिन है जब सरज अपने दसरे चरण में प्रवेश करता है। अधियारी रात होने के बावजूद भी इस दिन को बहुत ही शुभ माना जाता है। छोटे छोटे टिमटिमाते दीपक पूरे शहर में प्रज्वलित होने से रात का अभेद्य अंधकार धीरे-धीरे गायब हो जाता है। यह माना जाता है कि लक्ष्मीजी दीपावली कि रात को पृथ्वी पर चलती हैं और विपुलता व समृद्धि के लिए आशीर्वाद की वर्षो करती है। इस शाम लोग लक्ष्मी पूजा करते है और घर की बनाई हुए मिठाई सभी को बांटते है।

यह बहुत ही शुभ दिन है क्योंकि इसी दिन कई संतों और महान लोगों ने समाधि ली और अपने नश्वर शरीर छोड़ दिया था। महान संतो के दुष्टांत में भगवान कृष्ण और भगवान महावीर शामिल हैं। यह वो दिन भी है जब भगवान राम 14 वर्ष के वनवास के बाद माता सीता और लक्ष्मण के साथ घर लौटे थे।

इस दिवाली के दिन के बारे में एक बहुत ही दिलचस्प कहानी कठोपनिषद से केवल मौत के अंधेरे के माध्यम से गुजरने के बाद व्यक्ति उच्चतम ज्ञान की रोशनी देखता है और उसकी आत्मा, परमात्मा के साथ एक होने के लिए अपने शरीर के बंधन से मुक्त होती हैं। तब नचिकेता को सांसारिक जीवन के महत्व और मृत्यु के महत्व का एहसास हुआ। अपने सभी संदेह को छोडकर, उसने फिर दिवाली के समारोह में हिस्सा लिया।

चौथा दिन - गोवर्धन पजा (बलि प्रतिपदा)

समारोह का चौथा दिन वर्ष प्रतिपदा के रूप में जाना जाता है और राजा विक्रम की ताजपोशी को चिह्नित करता है। यह वो दिन भी है जब भगवान कृष्ण ने भगवान इंद्र की मूसलाधार बारिश के क्रोध से गोकुल के लोगों को बचाने के लिए गोवर्धन पर्वत उठाया था।

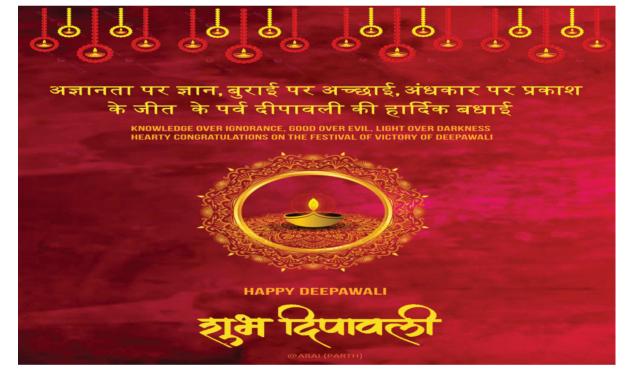
पांचवा दिन - भाईदुज

भाइयों और बहनों के बीच प्रेम का प्रतीक दर्शाता है। भाई उन्हें उनके प्यार की निशानी के रूप में एक उपहार देते हैं।

यह माना जाता है कि धन (लक्ष्मी देवी) बहत क्षणिक है और यह केवल वहीं रहती है. जहां कड़ी मेहनत, ईमानदारी और कृतज्ञता हो। श्रीमद भागवत में, वहाँ एक घटना के बारे में एक उल्लेख है जब देवी लक्ष्मी ने राजा बली का शरीर छोड़ दिया और भगवान इंद्र के साथ जाना चाहती थी। पूछताछ पर उन्होंने कहा कि वह केवल वहीं रहती है, जहां 'सत्य', 'दान', 'तप', 'पराक्रम' और 'धर्म' हो।इस दिवाली हम सब प्रार्थना करे और आभारी महसूस करें। विश्व के हर कोने में समृद्धि हो और सभी लोग प्यार, खुशी और उत्सव के पहले दिन, घरों और बरामद किये थे। महिलाओं ने अपने शरीर शांत चेहरा और सम्मानजनक कद देखकर अपने जीवन में विपुलता का अनुभव करे।



दिवाली का महत्व अच्छाई की बुराई पर जीत



दिवाली का महत्व - दिवाली सबसे अधिक है, जिसमें अक्सर नई वस्तुओं की खरीदारी भी **उत्सव** - भारत के कुछ हिस्सों में, दिवाली को मनाए जाने वाले हिंदू त्योहारों में से एक है, जो हर साल अक्टूबर/नवंबर के महीने में मनाया जाता है। हिंदू पौराणिक कथाओं के अनुसार, दिवाली मनाने के पीछे अलग-अलग कथाएं हैं जो महत्व बताती हैं। एक महत्वपूर्ण कथा दिवाली के आध्यात्मिक महत्व से संबंधित है। इस कथा के अनुसार, दिवाली लंका के राक्षस राजा रावण को हराने के बाद सीता और लक्ष्मण के साथ भगवान बुराई पर अच्छाई की जीत का जश्न मनाने और भगवान राम का स्वागत करने के लिए मिट्टी के दीपक जलाए। यह दर्शाता है कि कैसे ज्ञान और पुण्य हमेशा बुराई पर विजय प्राप्त करते हैं। एक अन्य आध्यात्मिक कथा भगवान कृष्ण द्वारा राक्षस नरकासुर को हराने के उत्सव से संबंधित है। मथुरा के लोगों ने मिट्टी के दीपक जलाकर बुराई पर अच्छाई की जीत के रूप में जश्न मनाया। भारत के पश्चिमी राज्यों में, दिवाली मुख्य रूप से उस दिन के रूप में मनाई जाती है कार्तिक अमावस्या के दिन , महीने की सबसे अंधेरी रात को मनाया जाने वाला रोशनी का त्योहार अंधकार पर प्रकाश की विजय को प्रदर्शित करने के लिए मनाया जाता है। आध्यात्मिक दृष्टि से, दिवाली का त्यौहार आत्मचिंतन और नवीनीकरण का समय माना जाता है, जहां लोग आंतरिक अंधकार और अज्ञानता पर विजय पाने का प्रयास करते हैं, जिसका प्रतीक अंधकार पर प्रकाश की विजय है। देवी लक्ष्मी की पूजा दिवाली का एक केंद्रीय हिस्सा है। लोगों का मानना है कि दिवाली के दौरान उनकी कृपा पाने से उनके घर में समृद्धि और धन-संपत्ति आती है। भारत के कुछ आदिवासी समुदायों में दिवाली का महत्व फसल कटाई के त्यौहार के रूप में है, जो कृषि मौसम के अंत का प्रतीक है और प्रकृति के प्रति आभार प्रकट करता है। त्योहार के दौरान घरों की सफाई और सजावट की पारंपरिक प्रथा, शारीरिक और आध्यात्मिक दोनों तरह से शुद्धता के महत्व को दर्शाती है। दिवाली का त्यौहार केवल रोशनी का उत्सव ही नहीं है, बल्कि आध्यात्मिकता, धर्म और सांस्कृतिक परंपराओं में भी इसके कई अर्थ हैं। इस लेख में, आइए दिवाली के त्यौहार के महत्व को उसके सभी पहलुओं के

साथ विस्तार से देखें। धनतेरस - इस दिन घरों की सफाई और आगामी दिवाली उत्सव की तैयारी की जाती

शामिल होती है। यह देवी लक्ष्मी की पूजा का भी दिन है, और इस दिन कोई कीमती वस्तु या सोना खरीदने की प्रथा है।

छोटी दिवाली - यह दिन भगवान कृष्ण द्वारा राक्षस नरकासुर पर विजय के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। लोग अपने घरों को सजाते हैं, दीप जलाते हैं और उत्सव की तैयारियों में जुट जाते हैं।

दिवाली - दिवाली का मुख्य दिन देवी लक्ष्मी राम की अयोध्या वापसी का उत्सव है। लोगों ने की और भी भव्य पूजा-अर्चना के साथ मनाया जाता है। इसमें पूरी तरह से सफाई, रंगोली बनाना, तेल के दीये जलाना, परिवार के साथ इकट्ठा होना, उपहारों का आदान-प्रदान करना, मिठाइयाँ बाँटना और देवी लक्ष्मी की पूजा-अर्चना करना शामिल

> पड़वा - यह दिन भगवान कृष्ण द्वारा अपने लोगों को इंद्र के प्रकोप से बचाने के लिए विशाल गोवर्धन पर्वत उठाने की उपलब्धि का सम्मान करता है। कई लोग इस महत्वपूर्ण घटना को दर्शाने के लिए मिट्टी और गोबर की मूर्तियाँ बनाते हैं।

> भाई दूज - भगवान यम और उनकी बहन यमी के बीच भाई-बहन के रिश्ते से प्रेरित, भाई दूज भाई-बहनों के लिए अपने रिश्तों का सम्मान और मज़बूती का दिन है। बहनें अक्सर अपने भाइयों की भलाई और सफलता के लिए प्रार्थना करती हैं और उनके माथे पर लाल तिलक लगाकर अपने प्यार और आशीर्वाद का प्रतीक बनाती हैं।

दिवाली के महत्व को विभिन्न दृष्टिकोणों से समझा जा सकता

अंधकार पर प्रकाश की विजय - दिवाली अंधकार पर प्रकाश और बुराई पर अच्छाई की विजय का प्रतीक है। राक्षस राजा रावण को हराकर भगवान राम के अयोध्या लौटने की कथा इस विजय का एक शक्तिशाली प्रतीक है। दिवाली के दौरान दीये और मोमबत्तियाँ जलाना अज्ञानता के नाश और ज्ञान एवं धर्म की स्थापना का प्रतीक है।

धार्मिक अनुष्ठान - हिंदुओं के लिए, दिवाली एक अत्यंत धार्मिक त्योहार है। यह देवताओं, विशेष रूप से धन और समृद्धि की देवी, देवी लक्ष्मी की पूजा करने का समय है। लोगों का मानना है कि दिवाली के दौरान पूजा-अर्चना और आशीर्वाद लेने से वे अपने घर में सौभाग्य और धन-संपत्ति ला सकते हैं।**फसल** दिवाली की खुशियाँ बाँटने का एक तरीका है।

फसल उत्सव के रूप में मनाया जाता है, जो कृषि ऋतु के अंत का प्रतीक है। किसान भरपूर फसल के लिए देवताओं के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हैं और समृद्ध भविष्य के लिए उनका आशीर्वाद मांगते हैं।

अनेकता में एकता - दिवाली एक ऐसा त्योहार है जो धार्मिक सीमाओं से परे है। इसे सिख, जैन और बौद्ध सहित विभिन्न धर्मों के लोग समान उत्साह के साथ मनाते हैं। यह समावेशिता एकता और सांप्रदायिक सद्भाव को बढावा देती है।

सांस्कृतिक परंपराएँ - दिवाली से जुड़े रीति-रिवाज, जैसे घर की सफाई और सजावट, मिठाइयाँ बनाना और उपहारों का आदान-प्रदान एकजुटता और पारिवारिक बंधन की भावना को बढ़ावा देते हैं। ये परंपराएँ भारतीय जीवन शैली का अभिन्न अंग हैं।

नवीनीकरण और नई शुरुआत - दिवाली को अक्सर नवीनीकरण के समय के रूप में देखा जाता है। लोग अपने घरों की सफाई और नवीनीकरण करते हैं, नए कपड़े खरीदते हैं, और अपने जीवन के विभिन्न पहलुओं में नई शुरुआत करते हैं। यह कायाकल्प और सकारात्मक बदलाव

आशा का प्रतीक - दिवाली का त्यौहार आशा और आशावाद का प्रतीक है। दीपों का प्रज्वलन निराशा के अंधकार को दूर करने और आशा के प्रकाश का स्वागत करने का एक सशक्त रूपक है।सा**माजिक उत्सव** - दिवाली सिर्फ़ परिवार का ही नहीं, बल्कि समुदाय का भी उत्सव है। लोग एक साथ मिलकर जरन मनाते हैं, खुशियाँ बाँटते हैं और आनंदमय उत्सवों में हिस्सा लेते हैं, जिससे सामाजिक बंधन मजबूत होते हैं।

आर्थिक महत्व - दिवाली व्यापार और वाणिज्य के लिए एक महत्वपूर्ण समय है। यह वह समय है जब दुकानें और बाजार रंग-बिरंगी सजावट से सज जाते हैं, और लोग उपहारों और नई वस्तुओं की खरीदारी में व्यस्त रहते हैं। इससे

अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिलता है। वैश्विक उत्सव - दिवाली सिर्फ़ भारत में ही नहीं, बल्कि दुनिया भर में फैले प्रवासी भारतीयों द्वारा भी मनाई जाती है। यह वैश्विक भारतीय समुदाय के लिए अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़े रहने और विभिन्न पृष्ठभूमि के लोगों के साथ

दिवाली भारतीय अर्थव्यवस्था को उपभोक्ता खर्च में भारी वृद्धि के साथ बढ़ावा देती है

अभी-अभी दशहरा और दुर्गा पूजा का त्योहार बीता है। देशभर में बीते दस दिनों में दुर्गा पूजा,नवरात्रि और रामलीला जैसे अन्य पारंपरिक धार्मिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन हुअ। इस दौरान लाखों करोड़ रुपये के सामान बिके। अब आगे दिवाली आने वाली है। अगले 31 अक्टूबर को देश भर में दिवाली का त्योहार मनाया जाएगा। इससे पहले रक्षा बंधन, गणेश पूजा जैसे त्योहार आए। आपको पता है कि देश में त्योहारों पर कितने का कारोबार होता है? एक अनमान है कि इस साल त्योहारों पर 4.25 लाख करोड़ रुपये का कारोबार होगा।

अर्थव्यवस्था को मजबूती, सबको मिलता है काम

त्याहारों पर जो लाखों करोड़ रुपये के सामान बिकते हैं, उससे सिर्फ उद्योगपित या दुकानदारों को ही फायदा होता है, ऐसी बात नहीं होता है। इससे बड़े पैमाने पर कारीगरों, शिल्पकारों एवं

श्रमिकों को भी बड़ा रोजगार मिला है। कंफेडरेशन व्यरीदारी करते हैं। मतलब कि दशहरे से ज्यादा ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (CAIT) के महामंत्री तथा दिल्ली के चांदनी चौक से सांसद प्रवीन खंडेलवाल का कहना है कि त्योहारों पर देश भर में बड़े पैमाने पर लाखों लोगों को रोजगार मिलता है। उत्सव में पंडाल निर्माण से लेकर मूर्ति निर्माण, सजावट, भोजन, कपड़े, बिजली व्यवस्था, पूजा सामग्री, फल-फूल और सेवाओं से जुड़े विभिन्न व्यवसायों को भारी मात्रा में काम मिला है। इससे स्थानीय अर्थव्यवस्था को बड़ा लाभ होता है।

सिर्फ दशहरे में 50 हजार करोड़ का कारोबार

खंडेलवाल बताते हैं कि दशहरे के 10 दिनों में लगभग 50 हजार करोड़ रुपये का व्यापार हुआ है। अब आज से अगले 15 दिनों तक देश भर में दिवाली की खरीदारी को लेकर बाजारों में काफी भीड़ रहेगी । इस दौरान तो लोग नए कपड़े से लेकर जेवर और सोने-चांदी के सिक्कों की भी

खरीदारी दिवाली में होगी।

त्याहारी खरीदारी चार लाख करोड रुपये के पार

कैट आ नुमान बताता है कि इस साल त्योहारी खरीदारी करींब 4.25 लाख करोड़ रुपये के आसपास रहेगी। इसमें रक्षा बंधन, गणेश चतुर्थी, नवरात्री, दुर्गा पूजा, दशहरा, दिवाली जैसे त्योहार शामिल होंगे। पिछल् साल इन त्योहारों में करीब 3.5 लाख करोड़ रुपये की खरीदारी हुई थी।

त्योहारों का सामाजिक और आर्थिक महत्व भी

त्योहारों से अर्थव्यवस्था को तो बल मिलता ही है, इससे सामाजिक सद्भाव भी प्रगाढ होता है। लोग एक-दूसरे से मिलते जुलते हैं। अपने रिश्तेदारों और परिवारजनों से मिलते हैं। उपहारों का आदान-प्रदान होता है।





मात्र 11500 डाउन पेमेन्ट एडवांस शेष 4990 रूपये प्रतिमाह की 98 किस्तें

720 वर्गफीट (18x40) 450 वर्गफीट (15x30) 525 वर्गफीट (15x35) डाउन पेमेंट -11500/-डाउन पेमेंट -13500/-डाउन पेमेंट -18400/-किश्त राशि - 7490x98 किश्त राशि - 5790x98 किश्त राशि -4990x98

800 वर्गफीट (20x40) 900 वर्गफीट (20x45) 1000 वर्गफीट (20x50) डाउन पेमेंट -20500/-डाउन पेमेंट -23000/-डाउन पेमेंट -25600/-किश्त राशि -8390x98 किश्त राशि -8990x98 किश्त राशि -9690x98

मुख्य विशेषताएं : ' यह आवास योजना नीमच बायपास (जैतपुरा फंटा मनासा रोड़) से लगभग 8 कि.मी. दूरी एवं नीलकंठ महादेव मंदिर से 500 मी. दुर मेन रोड़ पर स्थित हैं। * उक्त मेन रोड़ फोरलेन स्वीकृत हो चुका है। * पूर्णत: सुविधा युक्त कॉलोनी। * यहा कॉलोनी पूर्णत: शासकीय मान्यता प्राप्त है। * नगद में प्लॉट लेने पर तुरंत रजिस्ट्री।

गोकुलधाम बिल्डहोम (प्रा.) लिमिटेड

नीमच ऑफिस से प्लॉट देखने हेतु गाड़ी विजीट सुविधा उपलब्ध हैं ।

ऑफिस : विनायक हॉस्पिटल के सामने, पानी की टंकी के पास, यादव मण्डी, नीमच मो. 7568051364, 8209363824,7389492616

दीपावली पर आंगन में बनाएं ये ट्रेंडी और सिंपल रंगोली झटपट हो जाएगी तैयार, बनाने मे भी है आसान



दिवाली पर रंगोली बनाना एक शुभ परंपरा है, जिसके पीछे मान्यता है कि यह देवी लक्ष्मी का स्वागत करने और घर में सकारात्मक ऊर्जा लाने के लिए की जाती है। लोग रंग, फूलों की पंखुड़ियों, चावल के आटे या अन्य प्राकृतिक सामग्री का उपयोग करके विभिन्न डिजाइन जैसे कि स्वास्तिक, शुभ लाभ, दीपक, या देवी-देवताओं के आकार की रंगोली बनाते हैं।

दिवाली पर रंगोली क्यों बनाई जाती है?

लक्ष्मी का स्वागतः सबसे आम मान्यता यह है कि दिवाली पर रंगोली देवी लक्ष्मी के स्वागत के लिए बनाई जाती है, ताकि वे घर में प्रवेश करें और घर में समद्भि लाएँ। सकारात्मक ऊर्जाः रंगोली के रंगों और आकृतियों से घर में सकारात्मक ऊर्जा आती है और नकारात्मक ऊर्जा बाहर जाती है। पौराणिक मान्यताः एक अन्य मान्यता यह है कि भगवान राम के अयोध्या लौटने पर उनका स्वागत करने के लिए लोगों ने रंगोली बनाई थी,

इंदौर में पहली बार सुपर कॉरिडोर से रेडिसन चौराहे तक 17 किमी दूर पहुंची मेट्रो रेल



इंदौर। इंदौर शहर के लिए गुरुवार का दिन एक और ख़ुशखबर लेकर आया, शहर में पहली बार मेट्रो रेल सुपर कॉरिडोर से रेडिसन चौराहे तक चली। इस ट्रायल रन में मेट्रो ने 17 किमी की दूरी तय की। पहली बार इस इलाके में पहुंची मेट्रो रेल को देखकर लोगों की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। अभी मेट्टो केवल सुपर कॉरिडोर और उसके आस-पास के इलाके में ही चल रही थी। पहली बार में आसानी हो। 31 मई 2025 को

यह शहर के अंदर पहुंची है। इसके पहले 19 सितंबर को मेट्रो रेल सुपर कॉरिडोर से एमआर 10 आईएसबीटी तक चली थी। अभी तक मेट्रो रेल सुपर कॉरिडोर में 5.9 किमी के हिस्से में ही चल रही है। अब जल्द ही इसे शहरी इलाकों में भी चलाने की तैयारी है, ताकि विजय नगर, मेघदूत, बापट चौराहा, रेडिसन क्षेत्र में रहने वाले लोगों को एयरपोर्ट तक पहुंचने

रेल के पहले चरण का उद्घाटन किया था। एमपी की पहली मेट्रो के उद्घाटन के साथ पहले शुरुआत में इसमें फ्री में सफर करने की सुविधा दी गई। इसके बाद एक-एक हफ्ते में इसका किराया बढ़ाया गया। मेट्रो रेल के एक स्टेशन का नाम ऑपरेशन सिंद्र के नाम पर रखा गया है। इसके साथ ही पांच स्टेशनों के नाम वीरांगनाओं के

दिवाली सजावट के आइडियाज़ अपने घर के

ादवाला के ।लए अपने घर का संजान से एक शुभ वातावरण बन सकता है और माहौल को बेहतर बनाया जा सकता है। दिवाली की सजावट का आध्यात्मिक महत्व है और यह देवी-देवताओं को प्रसन्न करती है। यहाँ 2025 के लिए दिवाली की सजावट के बेहतरीन आइंडिया दिए गए हैं! दिवाली एक ऐसा भारतीय त्योहार है जो घर को सजाए बिना अधुरा सा लगता है। अपने घर के लिए दिवाली की सजावट के आइंडियाज पर विचार-मंथन शुरू करने से पहले , आपको एक और जरूरी काम पूरा करना होगा। अपने अपार्टमेंट को दिवाली की लाइट्स और दूसरे सजावटी सामानों से सजाने का पहला कदम है अपने घर की सफाई। आपकी दिवाली की रस्म में जितनी गहराई मायने रखती है, उतनी ही सजावट भी ! चाहे आप दो या तीन मंजिला घर में रहते हों, बंगले में या किराए के अपार्टमेंट में, ऐसे कई तरीके हैं जिनसे आप अपनी बड़ी या छोटी जगह को सजा सकते हैं और अपने घर को उत्सवी और आरामदायक बना सकते हैं। दिवाली के लिए अपने घर को सजाना एक ऐसा दिल को छू लेने वाला काम है जिसमें घर का हर सदस्य शामिल होता है। यह आपके परिवार और दोस्तों के साथ जुड़ने और काम पूरा करते हुए नई यादें बनाने का एक अच्छा तरीका है।

सफाई जैसा साधारण काम भी अपनों के साथ मिलकर करने पर आनंददायक बन सकता है। सफाई पर इतना जोर इसलिए दिया जाता है क्योंकि दीपों का यह त्योहार देवी लक्ष्मी के लिए समर्पित है, और सारी साफ़-सफ़ाई और सजावट उनके स्वागत के लिए होती है। हिंदू धर्म के अनुसार, लक्ष्मी केवल साफ़-सुथरे घर में ही निवास करती हैं। इसलिए, अगर आप समृद्धि चाहते हैं, तो अपने घर को भी उतनी ही लगन से साफ़ और सजाना बेहद जरूरी है।

आपके घर के लिए दिवाली सजावट के विचार

अगर आपका बजट सीमित है और आपको लगता है कि आपको सजावट के मामले में खुद को सीमित रखना होगा, तो आप बिलकुल गलत नहीं हो सकते। इसलिए हमने आपके बजट के हिसाब से आपके घर को सजाने के कुछ आसान लेकिन खूबसूरत आइंडियाज इकट्ठा किए हैं।

1. दिवाली सजावट आइंडिया -गेंदा फूल इकट्ठा करें

सजावट में गेंदा फूल, जिसे गेंदा फूल भी कहा जाता है, शामिल न हो। गेंदा फूल को 'योग की जड़ी-बूटी' कहा जाता है क्योंकि ऐसा माना जाता है कि इसकी खुशबू तनाव और नकारात्मकता को दूर भगाने और आपके मूड को बेहतर बनाकर आशावाद की भावना लाने की शक्ति रखती है। इस फूल के किसी भी हिंदू समारोह का एक अभिन्न अंग होने का एक और कारण यह है कि नारंगी और पीले रंग शुभ माने जाते हैं और माना जाता है कि ये किसी भी नई शुरुआत को आशीर्वाद देते हैं।

2. दिवाली सजावट का आइंडिया-मुख्य द्वार को सुंदर बनाएं

दिवाली के लिए घर को तुरंत रोशन करने का एक आसान तरीका है अपने मुख्य द्वार को सजाना। खूबसूरत लाइट्स लगाएँ या गेंदे के फूलों और आम के पत्तों से पारंपरिक सजावट करें। कोई भी पूजा, त्यौहार या यहाँ तक कि हिंदू दीयों, रंगोली और यहाँ तक कि तैरती मोमबत्तियों विवाह तब तक पूरा नहीं माना जाता जब तक से भी इसे भव्य बनाएँ।

3. दिवाली सजावट का आइंडिया-इनडोर पौधों का उपयोग करें

दिवाली पर अपने घर को सजाने के सबसे पर्यावरण-अनुकूल तरीकों में से एक है, घर के अंदर लगे पौधों को सजावट के तौर पर इस्तेमाल करना। कुछ पारंपरिक मिट्टी के गमले खरीदें और उन्हें सुंदर बनाने के लिए गेरू (प्राकृतिक रंग) लगाएँ। छोटे फर्न, बोनसाई और मनी प्लांट लगाएँ और उन्हें अपने लिविंग रूम में सजाएँ। उन्हें उभारने के लिए परी जैसी लाइट्स का इस्तेमाल करें।

वास्तु शास्त्र भी दिवाली के दौरान पेंटिंग्स में निवेश करने की सलाह देता है। नदियों, पहाड़ों या घने जंगलों की कुछ खूबसूरत प्राकृतिक पेंटिंग्स खरीदकर उन्हें अपने लिविंग रूम की दीवार पर सजाएँ। ये बिना ज्यादा कुछ किए आपके घर की खूबसूरती बढ़ा देती

4. दिवाली सजावट का आइंडिया-कुछ पेंटिंग्स में निवेश करें

वास्तु शास्त्र भी दिवाली के दौरान पेंटिंग्स में निवेश करने की सलाह देता है। नदियों, पहाड़ों या घने जंगलों की कुछ खूबसूरत प्राकृतिक पेंटिंग्स खरीदकर उन्हें अपने लिविंग रूम की दीवार पर सजाएँ। ये बिना ज्यादा कुछ किए आपके घर की खूबसूरती बढ़ा देती हैं।

5. दिवाली सजावट का आइंडिया -सजावटी गलीचे सजावट हैं

इंटीरियर डिजाइन का यह एक छोटा सा हिस्सा आपके अपार्टमेंट की शक्ल पूरी तरह बदल सकता है। त्योहारों का मौसम है, इसलिए चटख रंगों के गलीचे खरीदें। आपकी दीवारों या फ़र्नीचर से कंट्रास्ट करने वाला कोई भी गलीचा एक बेहतरीन विकल्प है। अगर आपकी दीवारें हल्के रंग की हैं, तो गहरे या चटख रंग का गलीचा चुनना सबसे को भी खूबसूरत बना देता है।

अच्छा कंट्रास्ट कॉम्बिनेशन है।

6. दिवाली सजावट का आइंडिया-पर्दे और पदों के साथ काम करें

आपके अपार्टमेंट की पुनर्सज्जा के लिए यह भी एक जरूरी चीज है। अपनी जरूरतों के हिसाब से, चटख या हल्के रंग के पर्दों में निवेश करें। इसमें डिजाइन के इतने सारे विकल्प हैं कि आपके पास कभी भी विकल्पों की कमी नहीं होगी। दिवाली के लिए, आप पारंपरिक मैरून, पीले या सरसों के रंग के पर्दे चुन सकते हैं। आप अपने पर्दों की लंबाई के साथ परी लाइटें भी लटका सकते हैं या उन्हें रेलिंग पर लगाकर अपने कमरे के कोनों को रोशन कर सकते हैं।

पर्दों को परी लाइटों से सजाने का एक और फायदा यह है कि अगर खिड़की है, तो रोशनी का असर आपके घर को बाहर से देखने वाले

7. ।दवाला सजावट का आज्ञाड्या सजावटी दीयों में निवेश करें

दिवाली रोशनी का त्योहार है, इसलिए अपने घर को भी रोशन करने में कोई कसर न छोडें। दीया दिवाली और घर की सजावट का एक अभिन्न अंग है। दीया पवित्रता, सौभाग्य, शक्ति और अच्छाई जैसे तत्वों का प्रतीक है। जब आप अपने घर को दीयों से रोशन करते हैं, तो यह नकारात्मक ऊर्जा को दूर भगाता है और ब्रह्मांड से केवल सकारात्मक ऊर्जा लाता है। दीयों से घर को रोशन करना बुराई पर अच्छाई की शाश्वत लड़ाई का प्रतीक है। हिंदू पौराणिक कथाओं और मान्यताओं के अनुसार, आपको 13 दीये जलाने चाहिए और उन्हें अपने घर के अलग-अलग हिस्सों में रखना चाहिए।हम सुझाव देंगे कि सांस्कृतिक स्पर्श को बनाए रखने के लिए पारंपरिक मिट्टी के दीये ही इस्तेमाल करें। घर के हर कोने में दीये रखें। आप एक सजावटी सीढ़ी भी किराए पर ले सकते हैं और अलमारियों के हर तल पर दीये रख सकते हैं।

8. दिवाली सजावट का आइंडिया -टिकाऊ कागज़ की सजावट

इस तरह की सजावट के लिए अपने स्थानीय बाजार में खोजबीन करें। ये किफ़ायती, रंगीन और रीसायकल करने योग्य होते हैं। ये आपके सादे अपार्टमेंट में भी जरूरी रंग भर देते हैं। आप इन्हें अपने लिविंग रूम, मुख्य द्वार या बालकनी में भी इस्तेमाल कर सकते हैं।

9. दिवाली सजावट का आइंडिया-दिवाली के लिए टेबल सेट करें

दिवाली का त्यौहार दोस्तों और परिवार के साथ शानदार भोजन के बिना अधूरा है। अपनी डाइनिंग टेबल को चमकीले रंग के कपड़े से सजाएँ। आम कटलरी की बजाय पारंपरिक, देहाती कटलरी का इस्तेमाल करें। बीच में तैरती हुई मोमबत्तियों का एक कटोरा रखें।

10. दिवाली सजावट का आइंडिया- अपने पूजा कक्ष को

हर घर में एक पूजा कक्ष या पूजा के लिए एक समर्पित स्थान होता है। इसे फूलों, दीयों आदि से अच्छी तरह सजाएँ। सजावट के सामान के रूप में पीले या लाल कपड़े का प्रयोग करें। एक अच्छी तरह से सजाया गया पूजा कक्ष दिवाली की सजावट में चार चाँद लगा देता है।

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक अविनाश जाजपुरा के द्वारा यश प्रिंटिंग प्रेस स्कीम नम्बन ३६ ए कलेक्टर कार्यालय के सामने मुद्रित एवं कारमों स्कूल के पास इन्दिरा नगर नीमच से प्रकाशित- सम्पर्क 9893796737 (सभी विवादों का न्यायिक क्षेत्र नीमच रहेगा।)